www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
22 जून 2021-वेबिनार विशेषांक Page No. : 159-161

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तिरस्कृत वर्ग की व्यथा : गाथा -पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा

-डॉ. संजीव कुमार. के

एम.इ.एस अस्माबी कॉलेज, कोडुंगल्लुर, त्रिशूर।

समकालीन हिन्दी साहित्य शोषित और तिरस्कृत वर्गों को लेकर कई विमर्श परम्पराएं दिखाई पड़ती हैं। चाहे वह नारी विमर्श हो, दलित विमर्श हो, या आदिवासी विमर्श हो। इन विमर्शों के समान्तर एक नया विमर्श अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहा है– वह है किन्नर विमर्श। विश्व में दो लिंग के अलावा एक अन्य प्रजाति के लोग रहते है, जो न ही पुरुष के श्रेणी में आते है और न ही स्त्री श्रेणी के अन्तर्गत। जिन्हें हम हिजड़ा, किन्नर, नपुंसक, खोजा आदि उपनामों से संबोधित करते है। समाज किन्नर जाति को स्त्री–पुरुष के दायरे से बाहर समझता है। इस अस्वीकार्यता के कारण किन्नर समुदाय कई विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' (2016) उपन्यास में एक तृतीय लिंगी बालक की वेदना और संवेदना को बताया गया है। ये उपन्यास पत्रकारिता शैली में लिखा गया है। पूरा उपन्यास माँ–बेटे के बीच के संवाद पत्र के माध्यम से होती है। विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली जन्म से नपुंसकलिंग होता है, उनके घरवाले समाज के भय के कारण उसे किन्नरों के हाथ में सौंप देता है। माँ घरवालों से छुपकर पोस्ट बॉक्स द्वारा आया पत्र के माध्यम से अपने बच्चे के साथ बात करता है। बिन्नी कई शिकायत अपनी माँ से करती है – 'तूने, मेरी बा, तूने और पप्पा ने मिलकर मुझे कसाइयों के हाथ मासूम बकरी सा सौंप दिया। मेरी सुरक्षा के लिए कोई कानूनी कार्रवाई क्यों नहीं की? मनसुख भाई जैसे पुलिस अधीक्षक पप्पा के गहरे दोस्त के रहते हुए? वो अपने आप मुझे बचाने केलिए तो आ नहीं सकते थे। मेरे आंगिक दोष की बात पप्पा ने उनसे बांटी जो नहीं होगी। वरना वह मुझे बचाना जरुर आ जाते'।[1] विनोद के मन में दुनिया को लेकर ही नहीं बल्कि खुद के बारे में भी बहुत अधिक सवाल होते है। वह अपने माँ से पूछता है–'मंजुल के गोद में सम्भालते हुए मैंने तुझसे प्रश्न किया था,'मेरे नुन्नू क्यों नहीं है, बा?' तो तूने मुझे बहलाया था। 'बच्चे के जन्मते ही आटे का नुन्नू बनाकर लगाना पड़ता है। नर्स भूल गयी तुझे लगाना। लगवा देंगे तुझे भी' ।[2] विनोद की ओर से लिखी चिट्ठियों के माध्यम से किन्नर जीवन की अनगिनत त्रासदियों को प्रस्तुत कर गंभीर संवेदनशीलता का परिचय मिलता है।

बिन्नी के माँ–बाप ने उसे कई डाक्टरों को दिखलाता है। लेकिन किसी से कोई लाभ नहीं होता। वह अपनी शारीरिक विकृति के साथ बड़ा होता जाता है। हिजड़ों की नायिका चंपाबाई बिन्नी को अपने साथ ले जाने केलिए कई बार उसके घर आकर धमकती है। कुछ समय तक उसके पिता चंपाबाई को खाली हाथ भेजने में सफल हो जाता है। अंत में चंपाबाई पूरी जानकारी ईकट्ठा करके घर आते है, धमकाती है, बिन्नी को उसके साथ ले जाती है। विनोद अपनी स्कूल के दोस्त ईशान को फोन करता है,उनकी आवाज़ सुनकर चौंक जाता है और